।। श्रीमत्कुंजबिहारिणे नमः।।

अनन्त श्रीविभूषित रसिक सखी सम्प्रदाय प्रवर्तकाचार्य

श्री स्वामी हरिदास जी महाराज के लाड़िले ठाकुर श्री श्री बाँकेबिहारी जी महाराज, श्रीधाम वृन्दावन

तजि सब आस, करै वृन्दावन वास खास।
कुंजन की सेवा में, निशंक चित धारे हैं।
जप, तप, योग, यज्ञ, संयम, समाधि, राग,
ज्ञान, ध्यान, धारणा में मन नाहीं धारे हैं।।

देव, पितृ, भैरव, भवानी, भूत, प्रेत आदि
लोक-परलोक ते छबीले भये न्यारे हैं।
एक बात जानैं, कछु दूजी पहिचानत नाहीं।
हम हैं श्रीबाँकेबिहारी जी के, बिहारी जू हमारे हैं।।

बाँके बिहारी.....दे दो सहारो।
कहीं छूट जाये ना दामन तुम्हारा।।

।। श्रीसर्वव्यापीजी सहायः।।

श्रीबाँकेबिहारी विनय पचासा

।। दोहा।।

बाँकी चितवन कटि लचक, बाँके चरणसाल।
स्वामी श्रीहरिदास के, श्री बाँकेबिहारी लाल।।

।। चौपाई।।

जै–जै–जै श्रीबाँकेबिहारी। हम आये हैं शरण तिहारी।।1।।

स्वामी श्रीहरिदास के प्यारे। भक्तजन के नित रखवारे।।2।।

श्याम स्वरूप मधुर मुसिकाते। बड़े बड़े नैंन नेह बरसाते।।3।।

पटका पाग पीताम्बर सोभा। सिर सिरपेच देख मन लोभा।।4।।

तिरछी पाग मोति लर बाँकी। सीस टिपारे सुन्दर झाँकी।।5।।

मोर पंख की लटक निराली। कानन कुण्डल लट घुँघराली।।6।।

नथ बुलाक पै तन मन वारी। मन्द हसन लागै अति प्यारी।।7।।

तिरछी ग्रीव कण्ठ मणि माला। उर पै गुंजा हार रसाला।।8।।

काँधे साजे सुन्दर पटका। गोटा किरण मोतिन के लटका।।9।।

भुज में पहिर अँगरखा झीनौ। कटि काछनी अंग ढक लीनौ।।10।।

कमर–बंध की लटकन न्यारी। चरण छुपाये श्रीबाँकेबिहारी।।11।।

इकलाई पीछे ते आई। दूनी शोभा दई बढ़ाई।।12।।

गादी सेवा पास विराजै। श्री हरिदास छवि अतिराजै।।13।।

घंटी बाजे बजत न आगै। झाँकी परदा–पुनि–पुनि लागै।।14।।

सोने–चाँदी के सिंहासन। छत्र लगी मोती की लटकन।।15।।
बाँके तिरछे सुघर पुजारी। तिनकी हू छवि लागे प्यारी।।16।।
अतर फुलेल लगाय सिहावैं। गुलाब जल केशर बरसावैं।।17।।
दूध–भात नित भोग लगावैं। छप्पन भोग भोग में आवैं।।18।।
मगसरि सुदि पंचमी आई। सो बिहार पंचमी कहाई।।19।।
आई बिहार पंचमी जबते। आनन्द उत्सव हौवें तबते।।20।।
बसन्त पंचमी साज बसन्ती। लगै गुलाल पोशाक बसन्ती।।21।।
होली उत्सव रंग बरसावै। उडत गुलाल कुमकुमा लावै।।22।।
फूल डोल बैठें पिय प्यारी। कुंज विहारिन कुंज बिहारी।।23।।
जुगल सरूप एक मूरत में। लखौ बिहारी की सूरत में।।24।।
श्याम सरूप हैं बाँके बिहार। अंग चमक श्री राधा प्यारी।।25।।
डोल एकादशी छोल सजावैं। फूले फूल छवि चमकावैं।।26।।
अक्षयतीज पै चरण दिखावैं। दूर–दूर के प्रेमी आवैं।।27।।
गर्मिन भर फूनल के बंगला। पटका हार फूलन के झंगला।।28।।
शीतल भोग, फुहारे चलते। गोटा के पंखा नित झलते।।29।।
हरियाली तीजन कौ झूला। बड़ी भीड़ प्रेमी मन फूला।।30।।
जन्माष्टमी मंगला आरती। सखी मुदित निज तन–मन वारति।।31।।
नन्द महोत्सव भीड़ अटूट। सवा प्रहर कंचन की लूट।।32।।
ललिता छठ उत्सव सुखकारी। राधा अष्टमी की चाव सवारी।।33।।

शरद चाँउनी मुकट धरावैं। मुरलीधर के दर्शन पावैं।।34।।
दीप दिवारी हटरी दर्शन। निरखत सुख पावै प्रेमीजन।।35।।
मन्दिर होते उत्सव नित–नित। जीवन सफल करें प्रेमी चित।।36।।
जो कोई तुम्हें प्रेम मे ध्यावें। सोई सुख मन वांछित फल पावै।।37।।
तुम हो दीनबन्धु ब्रज नायक। मैं हूँ दीन सुनो सुख दायक।।38।।
मैं आयौ तेरे द्वार भिखारी। कृपा करो श्री बाँकेबिहारी।।39।।
दीन दुखी के संकट हरते। भक्तन पै अनुकम्पा करते।।40।।
मैं हूँ सेवक नाथ तिहारो। बालक के अपराध बिसारो।।41।।
मोकूँ जग संकट ने घेरौ। तुम बिन कौन हरै दुख मेरौ।।42।।
विपदा ते प्रभु आप बचाऔ। कुपा करो मोकूँ अपनाऔ।।43।।
मैं अज्ञान मंद मति भारी। कृपा करो मोकूँ अपनाऔ।।44।।
बाँके बिहारी विनय पचासा। नित्य पढै जावै निज आसा।।45।।
पढ़े भाव ते नित प्रति गावै। दुख दरिद्र निकट नहीं आवै।।46।।
धन परिवार बढ़ै व्यापारा। सहत होय भव सागर पारा।।47।।
कलियुग के ठाकुर रंग राते। दूर–दूर के प्रेमी आते।।48।।
दर्शन कर निज हृदय सिहाते। अष्ट सिद्धि नव निधि सुख पाते।।49।।
मेरे सब दुख हरो दयाला। दूर करो माया जंजाला।।50।।

श्रीबाँके बिहारी जी महाराज के प्राकट्यकर्ता

श्रीस्वामी हरिदास जी महाराज

अखिल रसिक चक्रचूडामणि परमरसावतार श्री स्वामी श्रीहरिदास जी महाराज इस भूतल पर नित्यविहार को प्रकट करने के लिए प्रिया प्रियतम के निज महल से अवतरित हुए थे। उस समय विधर्मियों का साम्राज्य था। धर्म कर्मकाण्ड के भँवर में फँसा हुआ था, तब यह अति सूक्ष्म धर्म अर्थात् नित्य विहार श्रीस्वामी जी महाराज ने प्रकट किया। उन्होंने जिस रस-रीति का प्रवर्तन किया वह अनोखी थी। जिस पथ को प्राप्त करने के लिए बड़े-बड़े मुनिजन नेत्र बंद कर, नासिका पकड़ कर ध्यान साधते हैं, वेद जिस पथ को प्राप्त नहीं कर सका उन्हीं अनन्य रसिकों के बाँके पथ को श्रीस्वामी हरिदास जी महाराज ने विश्व में प्रकाशित किया औरा निशंक होकर नवीन रस रीति का प्रवर्तन किया, जैसाकि स्वयं वल्लभ पथगामी श्रीगोविन्द स्वामी जी ने उनकी प्रशंसा में लिखा है-

रसिक अनन्यन कौ पथ बाँकौ।

जा पथ कौ पथ लेत महामुनि, मूँदत नैन गहै नित नाकौ।
जा पथ कौ पछतात हैं वेद, लहै नहिं भेद रहै जहि जाकौ।।
सो पथ श्रीहरिदास लह्यौ, रसरीत की प्रीत चलाय निसाँकौ।
निसाननि बाजत गाजत गोविन्द, रसिक अनन्यन कौ पथ बाँकौ।।

श्रीस्वामी हरिदासजी महाराज इस धराधाम पर सं. 1534 वि. भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को उस समय अवतरित हुए थे, जब ब्रज में श्रीराधाजी का जन्म महोत्सव मनाया जा रहा था। उनके पिता प्रसिद्ध रसिक शिरोमणि श्रीआशुधीर जी महाराज थे और माता का नाम श्रीमती गंगा देवी था। ये सारस्वत ब्राह्मण थे। यह परिवार मूलत: पंजाब के मुल्तान प्रदेश का निवासी थ, परन्तु ब्रज प्रेम के वशीभूत होकर आशुधीर जी महाराज कोल (ब्रज की कोर) आकर बस गये थे। वहीं श्री स्वामी हरिदास जी महाराज का जन्म हुआ और उन्हीं के नाम पर उस परम पवित्र स्थान का नाम ''हरिदासपुर'' प्रसिद्ध हुआ। यह वर्तमान अलीगढ़ से

3 मील खैर मार्ग पर अवस्थित है। यहाँ खेरेश्वर मन्दिर है और प्रतिवर्ष भारी मेला लगता है। इसी गाँव में श्रीस्वामी हरिदास जी के भाईयों- श्रीगोस्वामी जगन्नाथजी एवं गोविन्दजी का जन्म हुआ। श्री स्वामी जगन्नाथ जी श्रीस्वामी हरिदासजी महाराज के अनुवर्ती होकर बाद में वृन्दावन आकर रहे।

श्री स्वामी हरिदास जी अपने दिव्य गुणों का प्रकाश करते हुए घर में 25 वर्ष तक रहे। उनका विवाह एक परम सुन्दरी ब्राह्मण कन्या से हुआ। परन्तु श्रीस्वामी जी जिस दिव्य रस में निमज्जित थे उसके समक्ष अन्य सब बन्धन व्यर्थ थे। उनकी पत्नी जब श्रीस्वामी हरिदास के दर्शनों के लिए आईं, तभी दीपक की लौ से उनका शरीर छू गया और वे प्रकाश रूपी होकर श्रीस्वामी जी के चरणों में विलीन हो गयीं। यह विलक्षण घटना थी। श्री स्वामी लाल दासजी ने लिखा है -

रवनि, रसायन परिहरि साह न मानत कौन।
आसू के हरिदास की लगै 'लाल' पग पौन।।

अपने समस्त धन धाम को परित्याग कर श्रीस्वामी जी अपने पूज्य पिता श्रीआशुधीरजी महाराज से दीक्षा लेकर श्रीधाम वृन्दावन में परम रमणीय निधिवन नामक नित्य विहार की भूमि में आकर निवास करने लगे। उस समय अर्थात् सं. 1560 वि. में श्रीधाम वृन्दावन एक गहन वन था। श्रीस्वामी हरिदास जी ने वृन्दावन प्रवास किया और वहाँ परम विलक्षण रस-रीति का प्रवर्तन किया।

श्रीस्वामी हरिदासजी महाराज नित्य निकुंज लीलाओं में ललिता स्वरूप हैं। वे नित्य विहार के नित्य समुद्र में रसमग्न रहकर प्रिया-प्रियतम से साक्षात्कार करते हुए उन्हीं की केलियों का गान करते थे। परनतु अन्य भक्तों को भी निकुंज के प्रिया प्रियतम का दर्शन लाभ हो सके। इस हेतु श्रीजगन्नाथ जी महाराज एवं अन्य रसिकों की प्रार्थना पर श्रीबिहारीजी महाराज के दिव्य विग्रह को निधिवन के प्रकट किया। स्वामीजीमहाराज के इंगित करने पर जिस समय प्रकाश गुफा से बिहारी जी महाराज प्रकट हुए उस समय प्रिया प्रियतम मुस्कुरा रहे थे। अनन्त रूप राशि उज्जवल प्रभा सौन्दर्य जगमगा रहा था। प्रिय प्रियतम के उस अपूर्व रूप का दर्शन कर उपस्थित जन धन्य हो गये। तभी स्वामी हरिदास जी ने प्रिया जी से कहा -

आपके सौन्दर्य को लोक सहन नहीं कर पायेगा? अत: आप दोनों एक ही रूप में प्रकाशित होकर दर्शन दें। श्रीबाँकेबिहारी जी महाराज के दिव्य श्रीविग्रह में प्रिया प्रियतम दोनों सम्मिलित स्वरूप और प्रकाश है। वे स्वामी हरिदास जी के प्राणाराध्य लाड़िले ठाकुर हैं। ये दिव्य प्रेम के स्वरूप हैं, रस रूप हैं, रसिकों के रस वस्तु के प्रदाता हैं। इनके अपार सौन्दर्य और तिरछे नयनों की प्रशंसा सहस्रों रसिकों ने की है। जो एक बार इनके दर्शन करता है, इन्हीं को हो जाता है। आज श्रीधाम वृन्दावन में भक्तजन प्रमुखत: श्रीबाँकेबिहारीजी महाराज के दर्शनों के लिए आते हैं। उनके दिव्य उत्सवों का आनन्द लाभ उठाते हैं।

श्रीजगन्नाथजी महाराज को श्रीबिहारी जी की सेवा का दायित्व स्वयं श्रीस्वामी हरिदास जी महाराज ने सौंपा। उन्होंने श्रीबिहारीजीको अपने प्राणों से अधिक लाड़ लड़ाया। और तभी से उनके वंशज श्रीबाँकेबिहारी जी महाराज की परम्परा से सेवा करते आ रहे हैं। इनके वंश में अनेक मनीषी एवं रसिक महापुरूष हुए हैं। श्रीविठलविपुलजी एवं श्रीबिहारिन दासजी इसी वंश के रत्न थे।

श्रीस्वामी हरिदासजी संगीत के महान आचार्य थे। जिस समय ग्वालियर का राजा मानसिंह तोमर संगीत के विद्वानों को एकत्रित कर ब्रजभाषा में ध्रुव पदों की रचना का प्रयास कर रहा था उसी समय श्रीस्वामी हरिदास जी इस ब्रजभूमि में प्रिय प्रियतम के रस से सराबोर ध्रुवपदों की रचना कर रहे थे तथा दिव्य उपासना संगीत का गान कर रहे थे। ध्रुवपद परम्परा के प्रवर्तन का श्रेय वस्तुत: श्रीगोस्वामी हरिदास जी महाराज को प्राप्त है। इनकी ध्रुवपद परम्परा दरवारी ध्रुवपद परम्परा से भिन्न, अतिशय प्रभावी एवं उपासनामयी है। इनके संगीत शिष्यों ने संगीत का प्रचार-प्रसार किया। तानसेन को भी उनके दिव्य संगीत का एक कण मात्र प्राप्त हुआ था। वह अपने आश्रयदाता सम्राट अकबर के साथ वृन्दावन में श्रीस्वामी हरिदास जी महाराज के दर्शन के लिए आया था। उसके आगमन पर कलाकारों ने जिन चित्रों की रचना की वे देश के विभिन्न संग्रहालयों में है। इनमें श्रीस्वामी हरिदास को तानपूरे पर संगीत का गान करते हुए सामने तानसेन को बैठा हुआ, उनके पीछे सम्राट अकबर को खडा हुआ चित्रित किया

गा है। ये चित्र इतिहास की अपूर्व निधि है।

श्रीस्वामी हरिदासजी का उपास्य रस तत्व लोक से विलक्षण है। उनके उपास्य प्रिया प्रियतम नित्य धाम श्रीवृन्दावन में नित्य लीलारत रहते हैं। वे सब अवतारों के अवतारी हैं, नित्यविहार हैं। लक्ष्मीपति ब्रजपति के लिए भी ये दुर्लभ हैं। ब्रज की उपासना से भी पूरे यह रसोपासना है। स्वामी हरिदास के उपास्य अजन्मा हैं। क्योंकि वे नित्य हैं।

ये जन्म कर्म से परे हैं। गाय ग्वाल गोप गोपीजन व ब्रज का व्यवहार इनके रसदेश से भिन्न हैं। इनके उपास्य न श्रीनन्दनन्दन हैं, न इनकी श्रीराधा श्रीवृषभानुजा हैं। द्वापर में श्रीकृष्ण की लीलाओं में दिव्य रस प्रवाहित हुआ था। वह नित्यबिहारी श्रीबाँके बिहारीजी कला मात्र हैं। नित्य बिहारी तो स्वयं रस समुद्र हैं। उनकी लीलाओं में कथमपि निमित्त नहीं हैं। वे नित्य हैं। श्रीबिहारीदास जी ने कहा है कि कर्म, धर्म, भुक्ति, मुक्ति आदि की मर्यादाओं में आगे अंश कलावतार और ब्रज के रस सिन्धु को तैरकर भी जो पार कर सकता है वही स्वामी हरिदास जी को प्राप्त कर सकता है। इसीलिए शान्त, दास्य, सख्य वात्सल्य एवं मधुर आदि सभी भावों से परे तत्सुखित्वमयी सखी भाव से ही उस परम उज्जवल रस देश की उपासना सम्भव है। श्रीस्वामी हरिदासजीमहाराज द्वारा रचित अष्टादश सिद्धान्त के पद श्रीकेलिमाल एवं उनके अनुगत महानुभावों की रससिद्ध वाणियों में यही नित्य विहार नित्य प्रकाशित है।

श्रीबाँकेबिहारीजी महाराज के दर्शनों की अपूर्वता उनकी दिव्य झाँकियों में है। यों तो मन्दिर के दर्शनों का प्रत्येक क्षण ही दिव्य उत्सवमय है, परन्तु वर्ष में प्रतिपदा, अक्षय तृतीया-चरण दर्शन, गुरूपूर्णिमा, हरियाली तीज का हिंडोला, जन्माष्टमी, नन्दोत्सव, राधाष्टमी के दिन स्वामी हरिदासजी का प्राकट्योत्सव, शरद पूर्णिमा को मुकुट मुरली आदि का रास वेश, दीपावली, श्रीबिहारी जी महाराज का प्राकट्योत्सव श्रीबिहार पंचमी, बंसत पंचमी, रंगीली होली और डोलोत्सव इस मन्दिर के प्रमुख उत्सव हैं। ग्रीष्मकाल में फूलों के भव्य बंगले तो प्राय: प्रतिदिन बनते ही हैं।

।। श्रीगणेशाय नमः।।

श्रीमद्अनन्य रसिक सखी सम्प्रदाय प्रवर्त्तकाचार्य सारस्वत कुलकमल दिवाकर आशुधीरात्मज श्रीनिधिवनाधीश गायनैक शिरोमणि अनन्त श्रीविभूषित स्वामी श्रीहरिदास चरण युगल समर्पितः

राजा सूर्य ।। श्रीमत्कुञ्जबिहारी।। मंत्री शनि

व्रतोत्सव–निर्णय

स्वामी श्रीहरिदासनामरसिकाः सारस्वतानां वराः।
वीणा-वादन-गायनैकचतुराः सद्भक्तलब्धादराः।।
वत्सम्पूजित-पादपद्मयुगलं श्रीमद्बिहारी प्रभो।
वार्षिक्योत्सवनिर्णयोविजयते नेत्राश्व व्योऽम द्वयोः।।

श्रीहरिदासाब्द 540 | विक्रम सम्वत् 2075 | शाके 1940 | सन् 2018–2019

चैत्र शुक्ल पक्ष

तिथि	वार	तारीख	विवरण/उत्सव
1	रविवार	18 मार्च 2018	वर्षारम्भ। (विरोधकृत नामक संवतसरः संकल्पादिकृते वर्षपर्यन्तं योजनीयः) श्रीबिहारीजी महाराज के सामने पंचाङ्ग श्रवण। श्रीआशुधीर उत्सव। श्रीनवदुर्गा प्रारम्भ।
8	रविवार	25 माच 2018	श्रीरामनवमी व्रत। (अष्टमीयुक्तानवमी, नवमी क्षय)
11	मंगलवार	27 मार्च 2018	कामदा एकादशी व्रत। आज से ही श्री बिहारीजी महाराज के फूल बंगला प्रारम्भ। प्रतिदिन सायं श्रावण की हरियाली अमावस्या तक फूल बंगला बनते हैं।
13	गुरूवार	29 मार्च 2018	प्रदोषव्रत।
15	शनिवार	31 मार्च 2018	पूर्णिमा व्रत (पूर्व पूर्व दिने)।

वैशाख कृष्ण पक्ष

11	गुरूवार	12 अप्रैल 2018	वरूथिनी एकादशी व्रत।
12	शुक्रवार	13 अप्रैल 2018	प्रदोषव्रत।
13	शनिवार	14 अप्रैल 2018	मेष संक्रान्ति।
30	सोमवार	16 अप्रैल 2018	सोमवती अमावस्या। (सौभाग्यावाप्तये अश्वत्थ परिक्रमा)

वैशाख शुक्ल पक्ष

3	बुधवार	18 अप्रैल 2018	अक्षय तृतियोत्सव। चन्दन यात्रा। आज के दिन श्रीबिहारीजी महाराज के चरण दर्शन, चन्दन लेपन एवं सायं सर्वांग दर्शन होते हैं। (द्वितीय क्षय) इस दिन स्वर्ण दान का विशेष महत्व होता है। श्रीबिहारी जी महाराज को चाँदी की पायल धारण कराई जाती है।
11	गुरूवार	26 अप्रैल 2018	मोहिनी एकादशी व्रत।
12	शुक्रवार	27 अप्रैल 2018	प्रदोष व्रत।
14	रविवार	29 अप्रैल 2018	श्रीनृसिंह जयन्ती।
15	सोमवार	30 अप्रैल 2018	पूर्णिमा व्रत। (व्रत पूर्व दिने) (बुद्ध जयंती)

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

11	शुक्रवार	11 मई 2018	अचला एकादशी व्रत।
13	रविवार	13 मई 2018	प्रदोष व्रत।
30	मंगलवार	15 मई 2018	अमावस्या। वट्सावित्री व्रत पूजन। वृष संक्रान्ति।

अधिक ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

11	शुक्रवार	25 मई 2018	कमला पुरूषोत्तमी एकादशी व्रत। (षष्ठी क्षय)
12	शनिवार	26 मई 2018	प्रदोष व्रत।
15	मंगलवार	29 मई 2018	पूर्णिमा व्रत।

अधिक ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

11	रविवार	10 जून 2018	कमला पुरूषोत्तमी एकादशी व्रत।
12	सोमवार	11 जून 2018	प्रदोष व्रत। (चतुर्दशी क्षय)

30	बुधवार	13 जून 2018	अमावस्या।

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

2	शुक्रवार	15 जून 2018	मिथुन संक्रान्ति। (पुण्यकाल प्रातः)
9	शुक्रवार	22 जून 2018	गंगा दशहरा। (दशम्यां हस्त्यर्क्षे संयुक्ता)
11	रविवार	24 जून 2018	निर्जला एकादशी व्रत। (इयमेव भीमसैनी) (द्वादशी मेलाखाटूश्यामजी)(राज.)
12	सोमवार	25 जून 2018	प्रदोष व्रत।
15	गुरूवार	28 जून 2018	पूर्णिमा व्रत। (व्रत पूर्व दिने)

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

11	सोमवार	09 जुलाई 2018	योगिनी एकादशी व्रत। ब्रह्मर्षि देवरहा बाबा पुण्यतिथि।
12	मंगलवार	10 जुलाई 2018	प्रदोष व्रत। (ऋणापाकरणाय)
30	शुक्रवार	13 जुलाई 2018	अमावस्या।

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

1	शनिवार	14 जुलाई 2018	रथ यात्रा। (पुण्ययुता प्रशस्ता) द्वितीय क्षय
5	मंगलवार	17 जुलाई 2018	कर्क संक्रान्ति।
11	सोमवार	23 जुलाई 2018	देवशयनी एकादशी व्रत। चातुर्मास्य प्रारम्भ
13	बुधवार	25 जुलाई 2018	प्रदोष व्रत।
15	शुक्रवार	27 जुलाई 2018	गुरू पूर्णिमा। गो. श्रीजगन्नाथाचार्य उत्सव। व्यास पूजन। आज के दिन श्रीनिधिवन राज में फूलबंगला बनता है।

खग्रास चन्द्रग्रहण : इस ग्रहण का स्पर्श रात्रि 11:54 से प्रारम्भ होगा तथा मोक्ष मध्य रात्रि 3:49 पर होगा। श्रृंगार आरती प्रातः 8 बजे होगी एवं राजभोग आरती 11 बजे तथा शयन आरती अपरान्ह 2 बजे तक हो जायेगी।

श्रावण कृष्ण पक्ष

11	मंगलवार	07 अगस्त 2018	कामिका एकादशी व्रत। (नवमी क्षय)
13	गुरूवार	9 अगस्त 2018	प्रदोष व्रत।
30	शनिवार	11 अगस्त 2018	हरियाली अमावस्या। फूल बंगला समाप्त।

श्रावण शुक्ल पक्ष

3	मंगलवार	14 अगस्त 2018	हरियाली तीज। (स्वर्ग गौरीव्रतं)

आज के दिन सायं श्रीबिहारीजी महाराज स्वर्ण हिंडोले में विराजते हैं। (षष्ठी क्षय)

11	बुधवार	22 अगस्त 2018	पवित्रा एकादशी व्रत। पवित्रा धारण।
12	गुरूवार	23 अगस्त 2018	प्रदोष व्रत।
15	रविवार	26 अगस्त 2018	पूर्णिमा व्रत। (व्रत पूर्व दिने) रक्षाबन्धन यजुर्वेदिनामन्ये–षाञ्चोपाकर्म श्रावणी। श्रृंगार से प्रारम्भ। (संस्कृत दिवसः हयग्रीव दर्शनम्)

भाद्रपद कृष्ण पक्ष

7	रविवार	02 सितम्बर 2018	अनन्त श्रीआचार्य विष्णुस्वामी जयन्ती। गो. रूपानन्दजी महाराज का उत्सव।
8	सोमवार	03 सितम्बर 2018	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत। (उदयव्यापिन्यां वैष्णवानां) आज रात्रि को शयन आरती के पश्चात् श्रीबिहारीजी महाराज के चबूतरे पर श्रीमद् भगवतान्तर्गत श्रीकृष्ण जन्म की कथा। रात्रि 12 बजे महाभिषेक। लगभग 3 बजे मंगला आरती होकर दर्शन खुले रहते हैं। आज के दिन श्रीबिहारीजी महाराज की मंगला आरती होती है।
9	मंगलवार	04 सितम्बर 2018	नन्दोत्सव। श्रृंगार आरती के बाद दधिकादौं।
11	गुरूवार	06 सितम्बर 2018	जया एकादशी व्रत।
12	शुक्रवार	07 सितम्बर 2018	प्रदोष व्रत। गोवत्स द्वादशी। त्रयोदशी क्षय
30	रविवार	09 सितम्बर 2018	कुशोत्पाटिनी अमावस्या। ॐ हूँ फट स्वाहाः इति मंत्रेण कुशोत्पाटनम्।

भाद्रपद शुक्ल पक्ष

2	मंगलवार	11 सितम्बर 2018	आज से स्वामी श्रीहरिदासजी महाराजका बधाई उत्स्व प्रारम्भ। सामश्रावणी।
4	गुरूवार	13 सितम्बर 2018	श्रीगणेश उत्सव।
5	शुक्रवार	14 सितम्बर 2018	ऋषि पंचमी।
6	शनिवार	15 सितम्बर 2018	बल्देव छठ। सूर्य षष्ठी।
8	सोमवार	17 सितम्बर 2018	श्रीराधाअष्टमी व्रत। श्रीराधा जयन्ती। आज सारस्वत कुल मार्तण्ढ अनन्य रसिक आचार्य शिरोमणि श्रीहरिदास जीमहाराज

			का पाटोत्सव (जन्मोत्सव) आज के दिन राजभोग आरती के पश्चात् सायं 4 बजे श्री बिहारीजी महाराज के मन्दिर में रास लीला होती है। सायंकाल मन्दिर से चाव की दिव्य सवारी श्रीनिधिवनराज पधारती है। गोस्वामी वर्ग समाज गायन करते हुए श्रीनिधिवनराज पधारते हैं एवं संगीत सम्मेलन के विशेष आयोजन होते हैं।
			कन्या संक्रान्ति। (काश्यर्यालक्ष्मीकुण्ड स्नानम्)
11	गुरूवार	20 सितम्बर 2018	पद्मा एकादशी व्रत।
12	शुक्रवार	21 सितम्बर 2018	श्रीवामन द्वादशी व्रत। श्रवण द्वादशी।
13	शनिवार	22 सितम्बर 2018	प्रदोष व्रत। (पुत्राऽवाप्तये)
14	रविवार	23 सितम्बर 2018	अनन्त चतुर्दशी व्रत। (उदयेत्रिमुहुर्तव्यापिनी चतुर्दशी)
14	सोमवार	24 सितम्बर 2018	आज से श्राद्ध प्रारम्भ।
15	मंगलवार	25 सितम्बर 2018	पूर्णिमा व्रत। व्रत पूर्व दिने।

अश्विन कृष्ण पक्ष

11	शुक्रवार	05 अक्टूबर 2018	इन्दिरा एकादशी व्रत। (षष्ठी क्षय)
12	शनिवार	06 अक्टूबर 2018	प्रदोष व्रत। (पुत्रावाप्तये)
30	मंगलवार	09 अक्टूबर 2018	अमावस्या। दोहित्रकर्तृक मातामाह श्राद्धम्। श्राद्ध पितृ विसर्जन पर्वू दिने।

अश्विन शुक्ल पक्ष

1	बुधवार	10 अक्टूबर 2018	शारदीय नवरात्रि प्रारम्भ। **आज से सेवा महोत्सव शुरू।**
9	गुरूवार	18 अक्टूबर 2018	विजयादशमी। (शमी पूजनम्) दुर्गा विसर्जन। (अपराह्ने श्रवणदशमी योगत्वात्) तुला संक्रांति।
11	शनिवार	20 अक्टूबर 2018	पापांकुश एकादशी व्रत।
13	सोमवार	22 अक्टूबर 2018	प्रदोष व्रत।
15	बुधवार	24 अक्टूबर 2018	शरद पूर्णिमा व्रत। आज के दिन श्रीबिहारी जी महाराज मोर मुकुट कटिकाछनी एवं वंशी धारण करते हैं। कार्तिक स्नान एवं दीपदान प्रारम्भ।

कार्तिक कृष्ण पक्ष

3	शनिवार	27 अक्टूबर 2018	करवाचौथ व्रत। चन्द्रोदय रात्रि 8:12 पर।
7	बुधवार	31 अक्टूबर 2018	अहोई अष्टमी। तारोदयचन्द्रोदयव्यापिन्याम्
8	गुरूवार	01 नवम्बर 2018	सेवा महोत्सव विराम। (दशमी क्षय)
12	रविवार	04 नवम्बर 2018	रम्भा एकादशी व्रत।
13	सोमवार	05 नवम्बर 2018	प्रदोष व्रत। धनतेरस। धनवन्तरि जयन्ती।
14	मंगलवार	06 नवम्बर 2018	रूप चतुर्दशी। छोटी दीपावली। हनुमान जयन्ती।
30	बुधवार	07 नवम्बर 2018	दीपावली। लक्ष्मी पूजन प्रदोष काल में। (अमावस्या) प्रदोषेलक्ष्मीन्द्रकुबेरादिपूजनम्।

कार्तिक शुक्ल पक्ष

1	गुरूवार	08 नवम्बर 2018	अन्नकूट–गोवर्धन पूजन।
2	शुक्रवार	09 नवम्बर 2018	भाई दौज। यम द्वितीया स्नान। विश्वकर्मा पूजा, चित्रगुप्त पूजा। आज से दर्शन समय परिवर्तन।
5	गुरूवार	12 नवम्बर 2018	**पुनः सेवा प्रारम्भ।**
8	गुरूवार	15 नवम्बर 2018	गोपाष्टमी व्रत। (ग्वामलंमकरणं पूजनंच)
8	शुक्रवार	16 नवम्बर 2018	वृश्चिक संक्रान्ति। (पुण्यकाल अग्रिमदिने)
9	शनिवार	17 नवम्बर 2018	अक्षय नवमी। (मथुरा–वृन्दावन की युगल परिक्रमा)।
11	सोमवार	19 नवम्बर 2018	देव प्रवोधनी एकादशी व्रत। (वैष्णवाना) तुलसी–शालिग्राम विवाह। सायं 4 बजे उप.
12	मंगलवार	20 नवम्बर 2018	प्रदोष व्रत। चातुर्मास्य व्रत समाप्त।
15	शुक्रवार	23 नवम्बर 2018	पूर्णिमा व्रत। व्रत पूर्वदिने। गुरूनानक जयन्ती। श्रीकाशीविश्वनाथ प्रतिष्ठादिनम्, नियमादि समाप्ति। **सेवा महोत्सव विराम।**

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

11	सोमवार	03 दिसम्बर 2018	उत्पन्ना एकादशी व्रत। (चतुर्थी क्षय)
12	मंगलवार	04 दिसम्बर 2018	प्रदोष व्रत।
30	शुक्रवार	07 दिसम्बर 2018	अमावस्या।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

5	बुधवार	12 दिसम्बर 2018	बिहार पंचमी। श्रीबिहारीजी महाराज का

			प्रादुर्भाव। श्रीबिट्ठल विपुलोत्सव। मध्यान्ह में स्वामी श्रीहरिदास जी महाराज की दिव्य सवारी श्री निधिवनराज से मन्दिर पधारती है। (श्रीरामविवाह दिनम्)
9	रविवार	16 दिसम्बर 2018	धनु संक्रान्ति। खरमास प्रारम्भ।
11	मंगलवार	18 दिसम्बर 2018	मोक्षदा एकादशी व्रत। (गीता जयन्ती)
13	गुरूवार	20 दिसम्बर 2018	प्रदोष व्रत।
15	शनिवार	22 दिसम्बर 2018	पूर्णिमा व्रत। दत्तात्रेय ज.

पौष कृष्ण पक्ष

11	मंगलवार	01 जनवरी 2019	सफला एकादशी व्रत। नवमी क्षय।
13	गुरूवार	03 जनवरी 2019	प्रदोष व्रत।
30	शनिवार	05 जनवरी 2019	अमावस्या।

पौष शुक्ल पक्ष

1	रविवार	06 जनवरी 2019	**सेवा महोत्सव पुनः प्रारम्भ।**
9	मंगलवार	15 जनवरी 2019	मकर संक्रांति। सरमास समाप्त।
11	गुरूवार	17 जनवरी 2019	पुत्रदा एकादशी व्रत।
12	शुक्रवार	18 जनवरी 2019	प्रदोष व्रत। कूर्म द्वादशी। सेवा विराम
15	सोमवार	21 जनवरी 2019	पूर्णिमा व्रत। (व्रत पूर्व दिने) शाकुम्भरी जयन्ती।

माघ कृष्ण पक्ष

4	गुरूवार	24 जनवरी 2019	संकट चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय 9.32 पर।
11	गुरूवार	31 जनवरी 2019	षट्तिला एकादशी व्रत।
13	शनिवार	02 फरवरी 2019	प्रदोष व्रत। (पत्रावाप्तये)
30	सोमवार	04 फरवरी 2019	सोमवती मौनी अमावस्या।

माघ शुक्ल पक्ष

5	रविवार	10 फरवरी 2019	बसन्त पंचमी। (श्रीसरस्वती पूजनं दर्शनंच) (काशी हिन्दु विश्वविद्यालय स्थापना दिवस)
8	बुधवार	13 फरवरी 2019	कुम्भ संक्रान्ति।
12	शनिवार	16 फरवरी 2019	जया एकादशी व्रत। एकादशी क्षय। वैष्णवानां।

13	रविवार	17 फरवरी 2019	प्रदोष व्रत।
15	मंगलवार	19 फरवरी 2019	पूर्णिमा व्रत। (ललिता जयन्ती)। माघ स्नान पूर्ण।

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

11	शनिवार	02 मार्च 2019	विजया एकादशी व्रत।
12	रविवार	03 मार्च 2019	प्रदोष व्रत।
14	मंगलवार	05 मार्च 2019	शिव चतुर्दशी व्रत। (वैष्णवानां) (शिव चतुर्दशी स्मार्तानां) (रात्रि जागरणं ज्योतिर्लिंग पूजा रूद्राभिषेक पूर्व दिनेऽपि)
30	बुधवार	06 मार्च 2019	अमावस्या। (शिव खप्पर पूजा)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

9	शुक्रवार	15 मार्च 2019	मीन संक्रान्ति।
11	रविवार	17 मार्च 2019	आँवला एकादशी व्रत। (इयमेव रंगभरी) आज सायं से बिहारी जी महाराज के मन्दिर में रंगीली होली प्रारम्भ।
12	सोमवार	18 मार्च 2019	प्रदोष व्रत। गोविन्द द्वादशी।
14	बुधवार	20 मार्च 2019	पूर्णिमा व्रत होलिका दहन। (भद्रान्ते, सूर्यास्त निशामुखे होलिका दाह रात्रौ 8/58 वादनात्परं)
15/1	गुरूवार	21 मार्च 2019	पूर्णिमा। धुलैड़ी महोत्सव। बसंतोत्सव।

चैत्र कृष्ण पक्ष

2	शनिवार	22 मार्च 2019	आज से दर्शन समय परिवर्तन।
11	सोमवार	01 अप्रैल 2019	पाप मोचनी एकादशी व्रत।
12	मंगलवार	02 अप्रैल 2019	प्रदोष व्रत। (ऋणापाकरणाय) काशीक्षेत्रेवारूणीपर्व।
30	शनिवार	17 मार्च 2019	अमावस्या। वर्ष समापन।

सम्पादक :
आचार्य पं. योगेश चन्द्र मिश्र
सुपुत्र : स्व. पं. श्रीरमेशचन्द्र मिश्र (याज्ञिक)
प्रेम गली, अठखम्भा, वृन्दावन
मो. 9997595661, 9411062848

राजभोग के पद

पद 1

भोजन बिहारीलाल कौ सो तो मैं जानी।
दरसन प्यारी रूप कौ पुतरिन रुचिमानी।।
प्यारे की मृदु मुसकानि मीठी लगैं भौंहनि कटुताई।
षट्रस वारों कोटि लौं दृग चंचलताई।।
प्यारे कों चाह छिन-छिन चौगुनी रुचि ज्योंही।
अलि भगवान जुगल रस वरन्यों जात न त्योंही।।

पद 2

भोजन कर दुहूँ दिशि देखों।
कहत न बनत बिनोद बिहारी बिहारिन लै उर लेखों।
अंग अंग अवलोकि लेत दोउ छुधित स्वाद की शेखों।
वचन रचन रुचि में रुचि पावत रस रसिक विशेखों।
पान करत मकरन्द पिया पिय अब प्रेम की रेखों।
सही आहार विहार निरन्तर करत न पाक परेखों।
यह रस तुष्ट पुष्ट मेरे प्यारे तुम सुन्दर वर वेषों।
श्रीबिहारिनदास कहत नैंनन सों तुम जिन लगौ निमेषों।।

श्रीबाँकेबिहारीजी की आरती एवं पद

मोर मुकुट कटि काछनी, कर मुरली उर माल।
यह बानिक मो मन बस्यौ, सदा बिहारीलाल।।
पाग बनी पटुका बन्यौ, बन्यौ लाल कौ भेष।
जै जै श्रीकुंज बिहारी लाल की, दौरि आरती लेष।।

आरती कीजै श्रीनवनागर की।
खंजन नैन बैन रसमाते, रूप सुधा सागर की।
पान खात मुसिक्यात मनोहर, मुख सुषमा आगर की।।
श्रीरसिक सखी दम्पति आरती सौं नैन सैन उजागर की।।
ऐसे ही देखत रहों जन्म सफल करि मानों।
प्यारे की भामती भामती जू के प्राण प्यारे जुगल किसोरहिं जानों।
छिन न टरौं पल होऊँ न इत-उत रहौं एक ही तानों।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी मन रानों।।

आरती व दर्शन खुलने का समय

ग्रीष्मकालीन (होली के बाद दौज से)

दर्शन खुलने का समय (प्रातः) 7:55 से 11:55 बजे तक
श्रृंगार आरती- 7:55 बजे राजभोग आरती- 11:55 बजे
दर्शन खुलने का समय (सायं) 5:30 से 9:30 बजे तक

शीतकालीन (दीपावली के बाद दौज से)

दर्शन खुलने का समय (प्रातः) 8:55 से 12:55 बजे तक
श्रृंगार आरती- 8:55 बजे राजभोग आरती- 12:55 बजे
दर्शन खुलने का समय (सायं) 4:30 से 8:30 बजे तक
शयनभोग आरती- 8:30 बजे तक

कुंजबिहारी अष्टक

यः स्तूयते श्रुतिगणैर्निपुणैरजस्त्रं,
सम्पूज्यते क्रतुगतैः प्रणतैः क्रियाभिः।
तं सर्वकर्मफलदं निजसेवकानां,
श्रीमद्विहारिचरणं शरणं प्रपद्ये।।1।।

यं मानसे सुमतये यतयो निधाय,
सधो जहुः सहृदया हृदयान्धकारम्।
तं चन्द्रमण्डल-नखावलि-दीप्यमानं,
श्रीमद्विहारिचरणं शरणं प्रपद्ये।।2।।

येन् क्षणेन समकारि विपद्वियोगो,
ध्यानास्पदं सुगमितेन नुतेन विज्ञैः।
तं तापवारण-निवारण-सांकुशांकं,
श्रीमद्विहारिचरणं शरणं प्रपद्ये।।3।।

यस्मै विधाय विधिना विधिनारदाद्याः,
पूजां विवेकवरदां वरदास्यभावाः।
तं दाक्षलक्षण-विलक्षण-लक्षणाढ्यं,
श्रीमद्विहारिचरणं शरणं प्रपद्ये।।4।।

यस्मात् सुखैकसदनान्मदनारिमुख्याः,
सिद्धिसमीयुरमुलां सकलांगशोभाम्।

तं शुद्धबुद्धि-शुभवृद्धि-समृद्धि-हेतुं,
श्रीमद्विहारिचरणं शरणं प्रपद्ये।।5।।

यस्य प्रपन्नवरदस्य प्रसादतः स्यात्,
तापत्रपहरणं शरणं गतानाम्।
तंनीलनीरजनिभं जनिभंजनाय,
श्रीमद्विहारिचरणं शरणं प्रपद्ये।।6।।

यस्मिन् मनो विनिहितं भवति प्रसन्नं,
खिन्नं कदिन्द्रियगणैरपि यद्विषण्णम्।
तं वास्तव-स्तव-निरस्त-समस्त-दुःखं,
श्रीमद्विहारिचरणं शरणं प्रपद्ये।।7।।

हे कृष्णपाद! शतिमति-विषादभक्त-
वांछा-प्रदामर-मरीरुह-पंचशाख।
संसार-सागर-समुत्तरणे वहित्र,
हे चिह्न-चित्रितचरित्र नमो नमस्ते।।8।।

इदं विष्णोः पादाष्टकमतिविषादाभिशमनम्,
प्रणीतं यत्प्रेम्णा सुकवि-जगदीशेन विदुषा।
पठेदयो वा भक्त्याऽच्युति-चरण-चेताः स मनुजो,
भवे भुक्त्वा भोगानभिसरति चान्ते हरिपदम्।।9।।

श्रीबिहारी लाल बाँकुरौ बिराजै।
सोहत सिंगार प्रिया उर छिन-छिन प्रति रति साजै।।
उपमा कोटि करै न्यौछावर इनहि निरखि निपट छवि छाजै।
श्रीबिहारी दास श्रीहरिदास विपुल बल गाई गूढ़ गुन गाजै।।1।।

राजत रंग भरे रति नैना उर्नींदे री शोभा देत।
सुकंचित कुचि विकसित सखी री अरून असित सेत।।
मानों अम्बुज पर जुग पुतरी अटके अति संकेत।
अति रस लोभी तज न सकत हँसत सुरत हेत।।
सब सुख सूचित अति अनुरागे जागे श्याम सहेत।
श्री बिहारी दास अंग संग मनोहर मन हर लेत।।2।।

श्री ललिता बीरी बनावै खवावै हो।
हाथ लिये कंचन की थारी रमक झलक चलि आवै हो।।
हास विनोद परस्पर दोऊ नाना ख्याल खिलावै हो।
जिनके संग प्यारी प्रीतम रूचि में सुरूचि उपजावै हो।।
गुनतो धनौ छैल श्री बिहारी जू माखन चोर यह औगुन एक।
नौ लख धेनु नन्दबाबा घर तौऊ न छोड़ी अपनी टेक।।
मो-से पतित अनेकन तारे तम-सौ छैल प्रभु एक।
ब्रजनिधि अरजी सुनौ जू हमारी पाप रहै नहिं एक।।3।।

लगी रट राधा, श्रीराधा नाम।
ढूँढ़ फिरी वृन्दावन सगारौ, नन्द ढिठौना श्याम।।
कै मन मोहन खोर साँकरी, कै मोहन नन्दगाम।
श्रीव्यास दास की जीवन राधा, धन बरसानौं गाम।।4।।

देखौरी या मुकुट की लटकन।
रास किये निरतत राधे संग, नुपूर काँत पायल की पटकन।।
पीताम्बर छुट जात छिनहिं छिन बैजन्ती बेसर की अटकन।
सूर श्याम की या छवि ऊपर झूठो ज्ञान योग में भटकन।।10।।

अष्टादश सिद्धान्त के पद

ज्यौंहि ज्यौंही तुम राखत हौ, त्यौंही त्यौंही रहियुत हौं हे हरि।
और तौ अचरजे पाँय धरौं सो तौ कहौ कौन के पैड़ भरि।।
जद्यपि कियौ चाहौं अपनौ मनभयौ, सो तो क्यों करि सकौं, जो तुम राखौ पकरि।
कहें श्रीहरिदास पिंजरा के जानवर ज्यों तरफाय रह्यौ उड़िबे कौ कितोऊ करि।।1।।

काहू कौ बस नांहि तुम्हारी कृपा तैं सब होय बिहारी बिहारिनि।
और मिथ्या प्रपंच काहे कौ भषियै सु तो है हारिनि।।
जाहि तुम सौं हित तासों तुम हित करौ सब सुख कारिनि।
रीहरिदास के स्वामी स्यामां कुंजबिहारी प्रानन के आराधारिनि।।2।।

कबहूँ-कबहूँ मन इत-उत जात, यातैऽब कौन अधिक सुख।
बहुत भाँतिन घत आनि राख्यौ नाहि तौ पावतौ दुःख।।
कोटि काम लावन्य बिहारी ताके मुँहाचुहीं सब सुख लियै रहत रूख।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी कौ दिन देखत रहौ विचित्र मुख।।3।।

हरि भजि हरि भजि रे मन छाडि न मान नर तन कौ।
मत बंछै मत बंछै रे तिलु तिलु धन कौ।।
अनमाँग्यौ आगैं आवैगौ ज्यों पलु लागै पलुकौ।
कहै श्रीहरिदास मीचु ज्यौ आवै त्यौ धन है आपुन कौ।।4।।

ए हरि मो-सौ न बिगारन कौ तोसौ न सँवारन कौ मोहि तोहि परी होड़।
कौन धौ जीतै, कौन धौ हारै पर बदी न छोड़।।
तुम्हारी माया बाजी विचित्र पसारी मोहे सुन मुनि काके भूले कोड़।
कहै श्रीहरिदास हम जीते हारे तुम तऊ न तोड़।।5।।

बंदे अखत्यार भला।
चित न डुलाव आव समाधि भीतर न होहु अगला।।
न फिर दर-दर पिदर दर न होहू अँधला।
कहै श्रीहरिदास करता किया सो हुआ सुमेरू अचल चला।।6।।

हित तौ कीजै कमल नैन सौं जा हित के आगैं और हित लागै फीको।
कै हित कीजै साधु संगति सौं, ज्यों कमलषु जाय सब जी कौ।।
हरि कौ हित ऐसौ जैसो रंग मजीठ, संसार हित रंग कसूँभ दिन दुती कौ।
कहैं हरिदास हित कीजै श्रीबिहारीजू सौं ओर निबाहु जानि जी कौ।।7।।

तिनका ज्यों बयारि के बस।
ज्यों चाहै त्यौ उड़ाय लै ड़ारै अपने रस।।
ब्रह्मलोक, सिवलोक और लोक अस।
कहै श्रीहरिदास बिचारि देखौ बिना बिहारी नाँहि जस।।8।।

संसार समुद्र मनुष्य मीन नक्र मगर और जीव बहु बंदसि।
मन बयरि प्रेमे स्नेह फंद फंदसि।।
लोभ पिंजर, लोभी मजरिया, पदारथ चारि खंद खंदसि।
कहै श्रीहरिदास तेई जीव पार भये जे गाहि रहे चरन आनन्द नंदसि।।9।।

हरि के नाम कौ आलस कत करत है रे, काल फिरत सर साँधैं।
बेर-कुबेर कछु नहिं जानत चढ़्यौ फिरत है काँधैं।।
हीरा बहुत जवाहर संचै कहा भयौ हस्थी दर बाँधैं।
कहैं श्रीहरिदास महल में बनिता बनि ठाढ़ी भई।।
एकौ न चलत, जब आवत अंत आँधैं।।10।।

देखौ इन लोगन की लावनि।
बूझत नाहिं हरि चरन-कमल कौ मिथ्या जनम गँवावनि।।
जब जमदूत आय घेरत, तब करत आप मनभावनि।
कहै श्रीहरिदास तबहि चिरजीवौ, तब कुंजबिहारी चितवानि।।11।।

मन लगाय प्रीति कीजै कर करूवा सौं, ब्रज वीथिनि दीजै सोहनी।
वृन्दावन सौं वन उपवन सौं, गुँजमाल हाथ पोहनी।।
गो गो सुतन सौं, मृगी सुतन सौं, और तन नैंकु न जोहनी।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी सौं चित ज्यों सिर पर दोहनी।।12।।

हरि कौ ऐसोई सब खेल।
मृग तृष्ना जग व्यापि रह्यौ है कहूँ बिजोरौ न बेल।।
धन मद जोवन मद, राज मद ज्यौं पंछिन में डेल।
कहि श्रीहरिदास यहै जिय जानौं, तीरथ को सौ मेल।।13।।

झूँठी बात साँची करि दिखावत हो हरि नागर।
निसि दिन बुनत उधेरत जात, प्रपंच कौ सागर।।
ठाठ बनाय धर्‌यौ मिहरी कौ है पुरूष तैं आगर।
सुन श्रीहरिदास यहै जिय जानौ सपने कौ सौ जागर।।14।।

जगत प्रीति करि देखी नाहिनें गटी कौ कोऊ।
छत्रपति रंक लौं देखे, प्रकृति विरोध बन्यौ नहीं कोऊ।।
दिन जो गये बहुत जनमानि के ऐसें जाउ जिन कोऊ।
कहै श्रीहरिदास मीत भले पाये बिहारी ऐसे पावै सब कोऊ।।15।।

लोग तौ भूलैं, भूलैं भूलैं तुम जिनि भूलौ मालाधारी।
अपनौं पति छाँडि औरन सों रति ज्यों दारनि में दारी।।
स्याम कहत तेई जीव मोतें विमुख भये सोऊ कौन जिन दूसरी करि डारि।
कहै श्रीरिदास जग्य देवता पितरन कौं श्रद्धा भारी।।16।।

जौलौं जीवौं तौलौं हरि भज रे मन और बात सब आदि।
द्यौस चारि के हला भला में तू कहा लेइयौ आदि।।
माया मद गन मद जोवन मद भूल्यौ नगर विवादि।
कहैं श्रीहरिदास लोभ चरपट भयौ काहे की लगै फिरादि।।17।।

प्रेम-समुद्र रूप-रस गहरे, कैसैं लागें घाट।
बेकाय्यौ दे जान कहावत जानि पन्यौ की कहा परी बाट।।
काहू कौ सर सूधौ न परै, मारत गाल गाली-गल हाट।
कहैं श्रीहरिदास जानि ठाकुर-बिहारी तकत ओट पाट।।18।।

आरती व दर्शन खुलने का समय

गर्मियों का समय (होली के बाद दौज से)

दर्शन खुलने का समय (प्रातः) 7:55 से 11:55 बजे तक

श्रृंगार आरती– 7:55 बजे राजभोग आरती– 11:55 बजे

दर्शन खुलने का समय (सायं) 5:30 से 9:30 बजे तक

शर्दियों का समय (दीपावली के बाद दौज से)

दर्शन खुलने का समय (प्रातः) 8:55 से 12:55 बजे तक

श्रृंगार आरती– 8:55 बजे राजभोग आरती– 12:55 बजे

दर्शन खुलने का समय (सायं) 4:30 से 8:30 बजे तक

शयनभोग आरती– 8:30 बजे तक

मनोज गोस्वामी (लाला)

गुंजन भैया

राजभोग सेवाधिकारी

मन्दिर ठा. श्रीबाँकेबिहारी जी महाराज

मो. 09837221606, 09917470190, 09897398273

E-mail :-
gunjanbhaiya@yahoo.co.in

इस वर्ष हमारी सेवा महोत्सव की तिथियाँ निम्न हैं :-

दिनांक : 01.10.2018 से 01.11.2018 तक रहेगी।

पुनः प्रारम्भ

दिनांक : 12.11.2018 से 23.11.2018 तक रहेगी।

45 दिन पश्चात् पुनः प्रारम्भ

दिनांक : 06.01.2019 से 18.01.2019 तक रहेगी।

*****

विशेष सेवा तिथियाँ

*** दिनांक : 24.10.2018 ***

श्री बिहारी जी महाराज का शरदोत्सव

एवं

कार्तिक दीपदान महोत्सव प्रारम्भ।

*****

*** दिनांक : 23.11.2018 ***

कार्तिक पूर्णिमा

*****